केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
Central Board of Secondary Education

टिप्पणी एवं आदेश / Notes & Orders Page No.:-_____

क्र॰ सं॰: केमोशिबो/सतर्कता/2024/ दिनांक : 30.01.2024

विषय: राजभाषा हिन्दी के प्रोत्साहन स्वरूप जनवरी माह में त्योहारों के अवसर पर सतर्कता अनुभाग में आयोजित गतिविधि के संबंध में ।

उपरोक्त विषयांतर्गत राजभाषा हिन्दी के प्रोत्साहन स्वरूप जनवरी माह में त्योहारों के अवसर पर निम्नलिखित अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा सतर्कता अनुभाग में दिनांक 17.01.2024 को आयोजित कथा लेखन गतिविधि में भाग लिया गया :-

क्र० सं०	नाम	पदनाम	आयोजित की गई गतिविधि
1.	श्री सतीश चन्द्र शर्मा	अधीक्षक	'गणतंत्र दिवस'
2.	श्री अजय जैन	अधीक्षक	'लोहड़ी की कहानी : पंजाबी लोक कथा'
3.	श्रीमती इशू क्वात्रा	अधीक्षक	'पोंगल – चार दिन का पर्व पोंगल'
4.	श्री अमर पाल	एम. टी. एस.	'लोहड़ी'
5.	श्री ओंकार सिंह	एम. टी. एस.	'मकर संक्रांति क्यूँ मनाई जाती है'
6.	श्री अर्जुन कुमार	एम. टी. ए.	'लोहड़ी की विशेषताएँ'

सतर्कता अनुभाग में आयोजित की गईं उपरोक्त गतिविधि की लिखित प्रति संलग्न हैं ।

मुख्य सतर्कता अधिकारी

अवर सचिव (हिन्दी)

गणतंत्र दिवस

भारतवर्ष को 15 अगस्त 1947 को स्वतन्त्रता मिली थी। उसके तीन साल बाद देश में भारत का संविधान लागू किया गया था। भारतीय संविधान 26 जनवरी 1950 को देश भर में प्रथम गणतंत्र दिवस मनाया गया था। डा. भीमराव अंबेडकर ने संविधान की ड्राफ्टिंग कमेटी की अध्यक्षता की थी। 26 जनवरी 1950 को ही देश को पूर्ण रूप से गणतंत्र यानी गणराज्य घोषित किया गया था। गणतंत्र दिवस इसलिए भी 26 जनवरी को मनाते हैं, क्योंकि इसी दिन वर्ष 1930 में भारतीय नेशनल कांग्रेस ने देश को पूर्ण रूप से स्वतन्त्र होने की घोषणा की थी। पूर्ण स्वराज घोषित करने की तिथि को यानी 26 जनवरी 1930 को काफी महत्वपूर्ण माना गया और इसलिए 26 जनवरी 1950 को भारत का संविधान लागू किया गया, जिसके बाद 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के रूप में घोषित किया गया और इस दिन को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाने लगा।

इस दिन राष्ट्रपति योग्य नागरिकों को राष्ट्र में उनके योगदान के लिए सम्मानित करने के लिए पुरस्कारों की घोषणा करते हैं। वीर जवानों को वीरता पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं।

सतीश चन्द्र शर्मा
अधीक्षक
सतर्कता अनुभाग

लोहड़ी की कहानी: पंजाबी लोक - कथा

लोहड़ी का संबंध सुंदरी नामक एक कन्या तथा दुल्ला भट्टी नामक एक योद्धा से जोड़ा जाता है। इस संबंध में प्रचलित ऐतिहासिक कथा के अनुसार, गंजीबार क्षेत्र में एक ब्राह्मण रहता था जिसकी सुंदरी नामक एक कन्या थी जो अपने नाम की भांति बहुत सुंदर थी। वह इतनी रूपवान थी कि उसके रूप, यौवन व सौंदर्य की चर्चा गली-गली में होने लगी थी। धीरे-धीरे उसकी सुंदरता के चर्चे उड़ते-उड़ते गंजीबार के राजा तक पहुंचे। राजा उसकी सुंदरता का बखान सुनकर सुंदरी पर मोहित हो गया और उसने सुंदरी को अपने हरम की शोभा बनाने का निश्चय किया।

गंजीबार के राजा ने सुंदरी के पिता को संदेश भेजा कि वह अपनी बेटी को उसके हरम में भेज दे, इसके बदले में उसे धन-दौलत से लाद दिया जाएगा। उसने उस ब्राह्मण को अपनी बेटी को उसके हरम में भेजने के लिए अनेक तरह के प्रलोभन दिए।

राजा का संदेश मिलने पर बेचारा ब्राह्मण घबरा गया। वह अपनी लाडली बेटी को उसके हरम में नहीं भेजना चाहता था। जब उसे कुछ नहीं सूझा तो उसे जंगल में रहने वाले राजपूत योद्धा दुल्ला-भट्टी का ख्याल आया, जो एक कुख्यात डाकू बन चुका था लेकिन गरीबों व शोषितों की मदद करने के कारण लोगों के दिलों में उसके प्रति अपार श्रद्धा थी।

ब्राह्मण उसी रात दुल्ला भट्टी के पास पहुंचा और उसे विस्तार से सारी बात बताई। दुल्ला भट्टी ने ब्राह्मण की व्यथा सुन उसे सांत्वना दी और रात को खुद एक सुयोग्य ब्राह्मण लड़के की खोज में निकल पड़ा। दुल्ला भट्टी ने उसी रात एक योग्य ब्राह्मण लड़के को तलाश कर सुंदरी को अपनी ही बेटी मानकर अग्नि को साक्षी मानते हुए उसका कन्यादान अपने हाथों से किया और ब्राह्मण युवक के साथ सुंदरी का रात में ही विवाह कर दिया। उस समय दुल्ला-भट्टी के पास बेटी सुंदरी को देने के लिए कुछ भी न था। अतः उसने तिल व शक्कर देकर ही ब्राह्मण युवक के हाथ में सुंदरी का हाथ थमाकर सुंदरी को उसकी ससुराल विदा किया।

गंजीबार के राजा को इस बात की सूचना मिली तो वह आग-बबूला हो उठा। उसने उसी समय अपनी सेना को गंजीबार इलाके पर हमला करने तथा दुल्ला भट्टी का खात्मा करने का आदेश दिया। राजा का आदेश मिलते ही सेना दुल्ला भट्टी के ठिकाने की ओर बढ़ी लेकिन दुल्ला-भट्टी और उसके साथियों ने अपनी पूरी ताकत लगा कर राजा की सेना को बुरी तरह धूल चटा दी।

दुल्ला भट्टी के हाथों शाही सेना की करारी शिकस्त होने की खुशी में गंजीबार में लोगों ने अलाव जलाए और दुल्ला-भट्टी की प्रशंसा में गीत गाकर भंगड़ा डाला। कहा जाता है कि तभी से लोहड़ी के अवसर पर गाए जाने वाले गीतों में सुंदरी और दुल्ला भट्टी को विशेष तौर पर याद किया जाने लगा।

सुंदर मुंदरिए हो
तेरा कौण बिचारा हो
दुल्ला भट्टी वाला हो
दुल्ले की ब्याही हो

सेर शक्कर पाई हो
कड़ी दे मामे आए हो
मामे चूरी कुट्टी हो
जमींदारा लुट्टी हो
कुड़ी दा लाल दुपट्टा हो
दुल्ले धी ब्याही हो
दुल्ला भट्टी वाला हो
दुल्ला भट्टी वाला हो

लोहड़ी के मौके पर यह गीत आज भी जब वातावरण में गूंजता है तो दुल्ला भट्टी के प्रति लोगों की अपार श्रद्धा का आभास स्वतः ही हो जाता है।

* * * * * * * * * *

अजय जैन
अधीक्षक
सतर्कता अनुभाग

चार दिन का पर्व पोंगल

पोंगल तमिल हिन्दुओं का एक प्रमुख त्योहार है। यह प्रति वर्ष 14-15 जनवरी को मनाया जाता है। इस त्योहार का नाम पोंगल इसलिए है क्योंकि इस दिन सूर्य देव को जो प्रसाद अर्पित किया जाता है वह पोंगल कहलाता है। तमिल भाषा में पोंगल का एक अन्य अर्थ निकलता है अच्छी तरह उबालना। दोनों ही रूप में देखा जाए तो बात निकल कर यह आती है कि अच्छी तरह उबाल ~~कर~~ कर सूर्य देवता को प्रसाद भोग लगाना।

इस पर्व के महत्व का अंदाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि यह चार दिनों तक चलता है। हर दिन के पोंगल का अलग अलग नाम होता है। यह जनवरी से शुरू होता है।

पहली पोंगल को भोगी पोंगल कहते हैं जो देवराज इन्द्र को समर्पित है। इसे भोगी पोंगल इसलिए कहते हैं क्योंकि देवराज इन्द्र भोग विलास में मस्त रहने वाले देवता माने जाते हैं। इस दिन संध्या समय में लोग अपने घर से पुराने वस्त्र कूड़े आदि लाकर एक जगह इकट्ठा करते हैं और उसे जलाते हैं। यह ईश्वर के प्रति सम्मान एवं बुराईयों के अंत की भावना को दर्शाता है।

दूसरा पोंगल को सूर्य पोंगल कहते हैं। यह भगवान सूर्य को निवेदित होता है। इस दिन पोंगल नामक एक विशेष प्रकार की खीर बनाई जाती है जो मिट्टी के बर्तन में नये धान से तैयार चावल, मूंग दाल और गुड़ से बनती है। पोंगल तैयार होने के बाद सूर्य देव की विशेष पूजा की जाती है और उन्हें प्रसाद रूप में यह पोंगल व गन्ना अर्पण किया जाता है और फसल देने के लिए कृतज्ञता व्यक्त की जाती है।

तीसरे पोंगल को माट्टु पोंगल कहा जाता है। तमिल मान्यताओं के अनुसार माट्टु भगवान शंकर का बैल है जिसे एक भूल के कारण भगवान शंकर ने पृथ्वी पर रहकर मानव के लिए अन्न पैदा करने के लिए कहा और तब से पृथ्वी पर रहकर कृषि कार्य में मानव की सहायता कर रहा है। इस दिन किसान अपने बैलों को स्नान कराते हैं। उनके सिंगों में तेल लगाते हैं एवं अन्य प्रकार से बैलों को सजाते हैं। बैलों को सजाने के बाद उनकी पूजा की जाती है।

चार दिनों के इस त्योहार के अंतिम दिन कानुम पोंगल मनाया जाता है जिसे तिरुक्कनूर के नाम से भी लोग पुकारते हैं। इस दिन घर को सजाया जाता है। आम के पल्लव और नारियल के पत्ते से दरवाजे पर तोरण बनाया जाता है। महिलाएं इस दिन घर के मुख्य द्वार पर कोलम यानी रंगोली बनाती हैं।

इसदिन पोंगल बहुत ही धूम धाम से साथ मनाया जाता है लोग नये वस्त्र पहनते है और दूसरे के यहां पोंगल और मिठाई बयना के तौर पर भेजते हैं। रात्रि के समय लोग सामुदिक भोजन का आयोजन करते है और एक दूसरे को मंगलमय वर्ष की शुभकामना देते हैं।

ईश्वर कवोत्रा
अधीक्षक, सतर्कता
विभाग.

16/1/2024

अमर पाल (लोहड़ी)

1 लोहड़ी का त्योहार फसल पकने और अच्छी खेती के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है. इस दिन लोहड़ी का लोग सूर्य भगवान और अग्नि देव की पूजा करके उनका आभार प्रकट करते है.

त्योहार सुख-समृद्धि और खुशियो का प्रतीक है लोग इस त्योहार को मिलजुल कर मनाते है और खुशियों के गीत गाते है तेहराजनवी को लोहड़ी का त्योहार हर साल मनाया जाता है

2 लोहड़ी मनाने के कुछ और कारण

- अकबर के समय मे दुल्ला भट्टी पंजाब प्रांत का सरदार था उसे पता चला कि संदलबार (वर्तमान पाकिस्तान) मे लड़कियों की बाजारी होती है. तब दुल्ला ने इसका विरोध किया और लड़कियों को दुष्कर्म से बचाया कर उनकी शादी करवा दी इस विजय के दिन के कारण भी लोग लोहड़ी का पर्व मनाते है
- दक्ष प्रजापति की पुत्री सती के योगाग्नि-दहन की याद मे ही यह अग्नि जलाई जाती है.

लोहड़ी का पर्व कृषि और प्रकृति को समर्पित होता है इस दिन किसान अपनी नई फसलों को अग्नि में समर्पित करते है और भगवान सूर्यदेव को धन्यवाद अर्पित करते है.

लोहड़ी का पर्व मकर संक्रांति के एक दिन पहले मनाया जाता है, इस पर्व पर शाम के समय लोग तैयार होकर एक जगह इकट्ठा होते है, फिर आग जलाई जाती है, और उसके इर्द-गिर्द डांस किया जाता है. साथ ही आग के आस-पास घेरा बनाकर दुल्ला भट्टी की कहानी भी सुनी जाती है। (इस प्रकार लोहड़ी और मकर संक्राति मनाई जाती है.)

मकर संक्रांति क्यों मनाई जाती है।

मकर संक्रांति का त्योहार 14 जनवरी को मनाया जाता है।
इस दिन सूर्योदय से शाम तक मनाया जाता है।
इस दिन पवित्र नदियों के किनारे स्नान करने का विशेष महत्व होता है।
स्नान के बाद लोग दान करते हैं और फिर घी से सारा खिचड़ी खाते हैं।
इस दिन तिल, गुड़, और मूंगफली का महत्व होता है।
मकर संक्रांति को सूर्य देवता और फसल से जुड़ा त्योहार माना जाता है।
मकर संक्रांति पर खरमास का भी समापन हो जाता है। और
शादी-विवाह जैसे शुभ और मांगलिक कार्यों पर लगी रोक हट जाती है।
मकर संक्रांति को अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है।
कुछ शहरों में इसे खिचड़ी भी कहा जाता है। उत्तर प्रदेश और
बिहार में इसे मकर संक्रांति और खिचड़ी के नाम से मनाया जाता है।
कहीं इसे संक्रांति, तो कहीं पोंगल, कहीं माघी, तो कहीं उत्तरायण, उत्तरायणी
और खिचड़ी पर्व जैसे कई नामों से जाना जाता है।

नाम - ओमकार सिंह
पद - एम. टी. एस.
शाखा – सतकिला

लोहड़ी की विशेषताएं

- लोहड़ी का त्यौहार सिख समुदाय का पावन त्यौहार है और इसे सर्दियों के मौसम में बड़े ही धूम-धाम से मनाया जाता है। लोहड़ी पौष माह की अंतिम रात को यानि मकर संक्रांति की सुबह तक मनाया जाता है।

- लोहड़ी भारत के अन्य राज्यों समेत विदेशों में भी सिख समुदाय इस त्यौहार को बहुत ही धूमधाम से मनाते हैं। लोहड़ी पंजाबी और हरियाणवी लोग बहुत उल्लास से मनाते हैं। यह देश के उत्तर प्रांत में ज्यादा मनाया जाता है। इन दिनों पूरे देश में पतंगों का तांता लगा रहता है। पूरे देश में भिन्न-भिन्न मान्यताओं के साथ इन दिनों त्यौहार का आनंद लिया जाता है।

- लोहड़ी का पर्व श्रद्धालुओं के अंदर नई ऊर्जा का विकास करता है और साथ ही में खुशियों की आपना का भी संचार होता है अर्थात यह त्यौहार प्रमुख त्यौहारों में से एक है।

- इस पावन त्यौहार के दिन देश के विभिन्न राज्यों में अवकाश का प्रावधान है और इस दिन को लोग उत्साह के साथ यादगार बनाते हैं।

- इस पर्व के दिन लोग मक्के की रोटी और सरसों का साग बनाकर खाते हैं और यही इस त्यौहार का पारंपरिक व्यंजन है। इस पर्व के दिन अलाव जलाकर चारों तरफ लोग बैठते हैं और फिर गजक, मूंगफली रेवड़ी आदि खाकर इस त्यौहार का आनंद उठाते हैं।

- इस पर्व का नाम लोई के नाम से पड़ा है। यह नाम महान संत कबीर दास की पत्नी जी का था।

- इस त्यौहार के जरिए सिख समुदाय नए साल का स्वागत करते हैं और पंजाब में इसी कारण इसे और भी उत्साह पूर्ण तरीके से मनाया जाता है।

- किसान भाई बहनों के लिए यह पर्व अत्याधिक शुभ होता है और इस पर्व के बीत जाने के बाद नई फसलों की कटाई की शुरुआत की जाती है।

नाम - अर्जुन कुमार
पद - एम.टी.एस.
शाखा - सतर्कता स्क